परियोजना संवाद पत्र

अंक: 5 2018

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

भीतर:

- मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से
- जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ
- एक कदम हरियाली की ओर रोहडू वन मण्डल
- आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ता ग्रामीण
- संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना
- अभ्यारण्यों के लिए सातोयामा की पहल
- आजीविका घटक के तहत व्यवसायिक योजनाओं का निर्माण
- निकिता स्वयं सहायता समूह सफलता की कहानी
- गवर्निंग बॉडी बैठक
- आयोजित बैठकें / कार्यशालाऐं / प्रशिक्षिण कार्यक्रम
- मीडिया में प्रोजेक्ट गतिविधियाँ

परियोजना कार्यालय पॉटरस हिल, समरहिल, शिमला–5 हिमाचल प्रदेश
दूरभाष: 0177-2830217, ई0 मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

जाइका का सुपरविजन दल श्री अकमीनों कैमों, सीनियर रिप्रेजेन्टेटिव, जाइका इंडिया तथा श्री विनीत सहाय सरीन, मुख्य विकास विशेषज्ञ ने जाइका वानिकी परियोजना हिमाचल प्रदेश क्षेत्रों का दौरा

मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से

वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन और आजिविका सुधार परियोजना जायका तीसरी पीढ़ी की परियोजना है । इस परियोजना के तहत जायका का एक प्रमुख जोर योजना, निगरानी और मूल्यांकन उदेश्य के लिए 'प्रौद्योगिकी का उपयोग' करना है । इसलिए हम परियोजना गतिविधियों की योजनाए, निगरानी और मूल्यांकन के लिए JICA-PIHPFEM&L में ड्रोन प्रौद्योगिकी का उपयोग करने जा रहे है।

भारत के विभिन्न राज्यों में जायका द्वारा वित्त पोषित 31 परियोजनाएं चल रही है । हिमाचल प्रदेश अपने वित्त पोषित PIHPFEM&L में ड्रोन प्रौद्योगिकी का उपयोग निगरानी के उदेश्य से करने वाला पहला राज्य है ।

ड्रोन की मदद से हम उच्च सकंल्प चित्र लाने में सक्षम होगें जो छवि सकंल्प का नियोजन रिजॉल्युशन सेंटीमीटर लेवल तक देगी। सैटेलाइट चित्रण की तुलना में, निगरानी पहलू के लिए डाटा को परिशिष्ट करने के लिए ड्रोन इमेजरी अधिक उपयोगी व्यवहार है । LISS-IV छवि का रिजॉल्युशन 5.8 mts है जो ड्रोन छवि के रिजॉल्युशन सेंटीमीटर की तुलना में बहुत कम होता है और जब भी आवयश्कता हो ड्रोन छवि प्राप्त की जा सकती है या कह सकते है कि उपयोगकर्ता की आवयश्कता के अनुसार कर सकते है ।

हाई रिजॉल्युशन छवि की मदद से ग्राउंड डेटा की पहचान करना बहुत स्पष्ट होगा। छवियां मौजूदा उपग्रह के पूरक परिशिष्ट होगीं । डीजीपीएस की मदद से कार्य क्षेत्र के लिए उतपन्न जियोडाटाबेस परियोजना के कार्यक्षेत्र के साथ ड्रोन उड़ान की योजना के लिए केएमएल फाइलों के स्त्रोत के रूप में उपयोग करेगा।

सर्वेक्षण और मैपिंग ड्रोन डिजिटल कैमरा, साइड (तिरछा) कैमरा और 3D LiDR पेलोड से लैंस है, जो छवियों को तुरन्त एकत्रित और संसाधित करते है । अतंर्निहित स्टीक ऑटो मिशन फक्ंशन और स्टीक पोजिशनिंग सिस्टम के साथ, सर्वेक्षण और मानचित्रण दक्षता में तेजी से सुधार करेगा ।

परियोजना में ड्रोन प्रौद्योगिकी का उपयोगः–

PIHPFEM&L (JICA वित पोषित) मे छोटे हस्तक्षेप क्षेत्र है और परियोजना की आवश्यकता के अनुसार ड्रोन का उपयोग किया जाएगा। ड्रोन मौजूदा प्राकृतिक संसाधनों और सामाजिक वातावरण, सभी प्राथमिकता वाले वार्डो/हस्तक्षेप क्षेत्रों के लिए छवियों को निम्नलिखित उद्देश्य के साथ केप्चर करेगा :

- परियोजना क्षेत्र के सूक्ष्म नियोजन नियमन के उद्देश्य से उच्च संकल्प के साथ सर्वेक्षण और मानचित्रण।

- परियोजना क्षेत्र में मुख्य रूप से वृक्षारोपण अस्तित्व मूल्याकंन, वर प्रबंधन, मिट्टी और जल संरक्षण कार्यों और अन्य सिविल कार्यों की निगरानी और मूल्याकंन के लिए उच्च छवियों के साथ आधारभूत आंकड़ों की स्थापना।
- बाद के वर्षों में हस्तक्षेप क्षेत्र में विभिन्न गतिविधियों के लिए परिवर्तन का पता लगाने व पौधा रोपण रकवों की तुलना करने के लिए आधारभूत डेटा संग्रह।
- उन एकल ब्लाकों से डिजिडल सरफेस मॉडल (डीएसएम), डिजिडल एलिवेशन मॉडल (डीईएम) डिजिटल टेरेन मॉडल (डीटीएम) प्वाइंट क्लाउड, 3डी मॉडल, ऑर्थो मोजेक और कंटूर उत्पन्न करने के लिए।
- ड्रोन डेटा पॉइंट क्लाउड डेटा विश्लेषण, और उच्च संकल्प छवियों के साथ परियोजना गतिविधियों की निगरानी और मूल्यांकन।

हस्तक्षेप क्षेत्रों की यह ड्रोन सर्वेक्षण परियोजना गतिविधियों की योजना बनाने के लिए हस्तक्षेप क्षेत्रों की आधार रेखा/स्थिति बनाता है। यह आधारभूत डेटा परियोजना के तहत सभी गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए एक बेंचमार्क डेटा के रूप में काम करेगा, और उच्च रिजॉल्यूशन छवियों का उपयोग करके उत्पन्न जानकारी भी परियोजना गतिविधियों की निगरानी में सहायक होगीं

ड्रोन सर्वेक्षण 400 ग्राम वन विकास समितियों (वीएफडीएस) साइट और 60 जैव विविधता प्रबंधन समितियों (बीएमसी) उप–समितियों साइटों में किया जाएगा।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया,
अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका

जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ

प्रकृति ने हमारे प्रदेश को अनेक प्रकार की वनस्पति का वरदान दिया है। विश्व में पाई जाने वाली लगभग 45 हज़ार से अधिक वनस्पति प्रजातियों का लगभग 7.32 प्रतिशत, हिमाचल में विद्यमान है। इनमें से अधिकतर प्रजातियां औषधीय गुणों से युक्त हैं। हमारे ग्रामीण परम्परागत रूप से इन जड़ी–बूटियों का घरेलू तथा आय के एक अतिरिक्त साधन के रूप में उपयोग करते आए हैं। लेकिन, पिछले कुछ दशकों में हमारी लगातार बढ़ती आबादी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए गौण वन उत्पादों की मांग में अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज की गई है। अनेक वनस्पति प्रजातियों के अवैज्ञानिक और अधिक दोहन के परिणामस्वरूप अनेक प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी हैं। इसके दृष्टिगत इनके संरक्षण एवं विकास की दिशा में विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं।

वनों से अत्यधिक दोहन तथा अन्य कई कारणों से जड़ी–बूटियों के अपघटन की रोकथाम की दिशा में जाइका वित पोषित 'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबधन एवं आजीविका सुधार परियोजना' के अतंर्गत पी.एम.यू. स्तर पर जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ द्वारा ग्राम वन विकास समितियों व जैव–विविधता समितियों के माध्यम से जड़ी–बूटियों के पुर्नउत्थान व संवर्धन की दिशा में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं।

शतावरी

इससे जहां एक ओर लुप्त प्रायः होने वाली जड़ी–बूटियों का पुर्नउत्थान संभव हो पाएगा वहीं दूसरी ओर वनों पर आश्रित जन समुदाय को आय का एक अतिरिक्त साधन सतत् रूप में उपलब्ध हो पाएगा।

राज्य में पहली बार इस तरह के जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ का गठन किया गया है जोकि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को वन भूमि और स्थानीय समुदायों की निजी भूमि में औषधीय पौधों की खेती करने हेतू मार्गदर्शन करेगा।यह प्रकोष्ठ स्थानीय समुदायों को औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने हेतू विभिन्न स्तरों पर तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवाएगा। इसके अलावा सरकार द्वारा चलाई गई महत्वाकांक्षी ''वन समृद्धि, जन समृद्धि'' योजना के उद्देश्यों को पूरा करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा।

पामारोसा

चौरा

जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ के कार्यः

- ❖ परियोजना हस्तक्षेप क्षेत्र में विशेष रूप से औषधीय पौधों (एन.टी.एफ.पी) के निरंतर निकास को विनियमित करना।

- युवाओं को स्थायी आजीविका और आय सृजन के अवसर प्रदान करने के लिए बढ़ावा देने वाली कुछ विशिष्ट प्रजातियों के एक्स–सीटू प्रसार को मानकीकृत किया करना।
- 11 प्रस्तावित समूहों में क्लस्टर स्तर पर ''हिम जड़ी–बूटी सहकारी समितियों'' का गठन करना।
- उच्च मूल्य वाले प्रमुख औषधीय पौधों सहित चयनित एनटीएफपी के मूल्यवर्धन (Value addition) पर कार्य करना।
- चुने हुए उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों को उगाने के लिए कृषि तकनीक विकसित करने और सतत् दोहन मापदण्ड तैयार करने के लिए अनुसन्धान संस्थाओं से तालमेल स्थापित करना।
- उत्पादक संगठनों के प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण तथा व्यापार विकास सेवाओं की सुविधा प्रदान करना
- औषधीय पौधों की खरीद और व्यापार के लिए स्ट्रीमलाइन मार्केटिंग चैनल और हिमाचल प्रदेश में औषधीय पौधों के उत्पादन के लिए एक ब्रांड बनाने के लिए कार्य करना।

एलोवेरा

कुटकी

चिरायता

जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ द्वारा किए जा रहे कार्यः

स्थानीय समुदायों की भागीदारी से जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ के माध्यम से जिला बिलासपुर में पामारोजा घास (सिंबोपोगोन मार्टिनी) व चील की पत्तियों से ब्रिकेट बनाने के लिए, चौपाल में सतुआ (पेरिस पॉलीफाइला) और मंडी व सुकेत में टौर की पत्तियों की पत्तल बनाने के लिए चयनित किए गए हैं, जो सभी स्थानीय समुदायों की भागीदारी के माध्यम से कार्यान्वयन के चरण में हैं। इसके अलावा अन्य उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों की प्रजातियां जैसे पतीश (एकोनिटम हेट्रोफिलम), शतावरी (एसपैरागस रेसमोसस), घृतकुमारी (एलो वेरा/एलो बारबाडेन्सिस), कुटकी (पिक्रोराइजा कुरू) और चिरायता (स्वर्शिया कॉर्डाटा) पर कार्य किया जा रहा है। वित वर्ष 2021–22 में आजीविका मॉडल और संबधित गतिविधियों को लागू करने के लिए परियोजना के तहत लगभग 50 लाख रूपए व्यय किए जाने का प्रावधान है।

घुमारवीं वन परिक्षेत्र के सीमांकित स्थायी वन क्षेत्र ढींगू में पामारोजा का बीजारोपण करते हुए

जड़ी बूटी प्रकोष्ठ टीम ने परियोजना द्वारा तैयार की गई कमांद पौधशाला का दौरा किया

गुच्छी

सतुवा

एक कदम हरियाली की ओर रोहडू वन मण्डल में सामुदायिक विकास कार्यों का विवरण।

"वनों की सुरक्षा होगी जब ।
तो पृथ्वी पर हरियाली होगी तब" ।।

पर्यावरण संरक्षण एंव वृक्षारोपण को बढ़ावा देने के उद्देश्य को लेकर जायका वानिकी परियोजना हिमाचल प्रदेश के 6 जिलों में वनों के महत्व एंव इनके संरक्षण की आवश्यकता को आम जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही है ।

वृक्षों की जैव विविधता के क्षेत्र में बहुत महत्व है, इसलिए वन संरक्षण एक महत्वपूर्ण मुद्धा है जैसा कि वन क्षेत्र तथा पेड़ों की संख्या में निरन्तरता में जैविक हस्तक्षेप से कमी आ रही है ।

परिणाम स्वरूप प्रदूषण जैसी समस्याऐं विकराल रूप धारण कर रही है । इन सभी मुद्दों पर चर्चा और समाधान की कोशिश में जिला शिमला के विकास खण्ड जुब्बल – कोटखाई की ग्राम पंचायत नन्दपुर के वार्ड रूहिन–मलोग के लोगो द्वारा एक सराहनीय प्रयास और अनूठी पहल की गई है ।

परियोजना घटक "सामुदायिक विकास कार्य" गतिविधि के अर्न्तगत इस वार्ड के कार्यों की सुचि वैसे तो बहुत बड़ी थी परन्तु दूसरी समस्याऐं जैसे सामुदायिक भवन का निर्माण, स्ट्रीट लाइटों का लगवाना, गली–नालियों को पक्का करना आदि अनेक कार्यों को दूसरे स्थान पर रखकर, पर्यावरण संरक्षण को सर्वोपरी प्राथमिकता देकर बहुत ही सूझबूझ से एक ऐसे कार्य को चुना जिससे आगे आने वाले 30–35 वर्षों तक सैकड़ों नही, हजारों वृक्षों को कटने से बचाया जा सकेगा ।

हिमाचल के ऊपरी क्षेत्र में सेब उत्पादन ही जीवन यापन का मुख्य साधन है इस क्षेत्र का प्रत्येक किसान अपनी कुल भुमि में लगभग 90–95% तक सेब की पैदावार ही प्राप्त करता है । इन पौधों के संरक्षण तथा हर वर्ष अधिक से अधिक पैदावार पाने के लिए किसान साल भर में कई–कई बार कीटनाशक तथा रासायनिक

खादों और गोबर आदि का प्रयोग अपने बगीचों में करता है ।

उपरोक्त के इस्तेमाल से बगीचों में घास, खरपतवार बहुत अधिक मात्रा में उग जाता है । घास को संग्रहित कर किसान शरद ऋतु में इसे पशुओं के चारे में प्रयोग में लाते है । सग्रंहित किए घास को 3–4 महीनों तक सुरक्षित रखने के लिए एक खम्बें जैसे सीधे वृक्ष की आवश्यकता होती है जिसमें चारों ओर से घास बांध दिया जाता है और इसे स्थानीय भाषा में "टोली" कहते है कहीं किन्तु तो कहीं भोटा के नाम से भी पुकारा जाता है। इस तरह प्रत्येक व्यक्ति (Household) को कम से कम 3–4 खम्भों की आवश्यकता होती है, जिसमें हर वर्ष बहुत पेड़ों को काटा जाता है । इस पंचायत में भी लोग आवश्यकतानुसार यही कार्य कर रहे थे। परन्तु अन्दर ही अन्दर यह भी था कि इससे हमारी वन सम्पदा को भारी नुक्सान हो रहा है ।

वनों का संरक्षण करने तथा वन सम्पदा को बचाने के दृष्टिगत लोगों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि परियोजना द्वारा सामुदायिक विकास कार्य के अर्प्तगत उपलब्ध करवाई जाने वाली 5 लाख की राशि को केवल एक ही कार्य पर खर्चा करेगें । वह कार्य चिन्हित हुआ टोली लगाने के लिए लोहे के खम्भे खरीदेंगे । साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि इस वार्ड के सभी परिवार को 4–4 खम्भे वितरित किए जाऐंगे ।

सभा के लिए गए निर्णय पर पुर्नविचार की आवश्यकता तब आन पड़ी जब प्रत्येक परिवार के लिए 4–4 खम्भे उपलब्ध करवाने के लिए परियोजना राशि पर्याप्त न हो पाई । इसी के मध्य नज़र इस कार्य को पूर्ण करवाने के लिए वार्ड वासियों द्वारा दूसरा सराहनिय फैसला लिया गया कि इसके लिए प्रत्येक लाभार्थी अशं के रूप में 2–2 हजार रूपये की राशि एकत्र कर CD & LIP खाते में जमा करेगें । लाभार्थी अशं एकत्र करते समय वार्ड के गरीबी रेखा से नीचे रह रहे परिवारों को राहत देते हुए ऐसे 15 परिवारों से 1200 रूपये प्रति परिवार और कुल 18000/– रूपये एकत्र किए गए तथा अन्य परिवारों से 1 लाख 70 हजार की राशि एकत्र की गई इस तरह समुदाय का कुल अशं 1 लाख 88 हजार रहा सामुदायिक अशं के एकत्र होने के बाद समिति के CD & LIP खाते में खम्बें खरीदने के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध हो गई ।

इसके उपरान्त आवश्यक कार्यवाही पूर्ण करके 5,90,944/– (पांच लाख नब्बे हजार नौ सौ च्वालीस) रूपये की लागत से इस वार्ड में 400 लोहे के खम्बें खरीदे गए। खम्बे वितरित करने के लिए वार्ड वासियों, VFDS समिति द्वारा वनमण्डलाधिकारी रोहडू (DMU) को सादर आमन्त्रित किया गया तथा उनके कर कमलों द्वारा आबंटन प्रक्रिया को एक जोश और उल्लास से पूर्ण किया गया/इसके साथ–साथ इस वितरण समारोह को JVA TV (Local Rohru Channel) द्वारा कवर कर स्थानिय चैनल पर प्रसारित किया गया । इसके परिणामस्वरूप ग्राम पंचायत नन्दपुर का रूहिल–मलोग वार्ड आस–पास के क्षेत्र में चर्चा का विषय और लोगों के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत बन गया ।

इस वार्ड से प्रेरणा लेकर वार्ड शलाड़, नन्दपुर के लाभार्थियों ने भी परियोजना द्वारा उपलब्ध करवाई गई राशि में से 2 लाख 50 हजार के खम्बे क्रय कर प्रति परिवार 2–2 खम्बे वितरित किए । इसी तरह बदियार–बम्फानु वार्ड ने भी बम्फानु वार्ड में 2730 Tree Branch Support (तूड़) क्रय कर 39 परिवारों को 70–70 "तूड़" आबंटित किए । इनका इस्तेमाल सेब के फलदार पौधों को सहारा देने के लिए किया जाता है । जंहा पहले बड़े – बड़े वृक्षों की टहनियों को काटकर इस्तेमाल में लाया जाता था ।

निःसन्देह ग्राम पंचायत नन्दपुर की वी0 एफ0 डी0 एस0 रूहिल–मलोग का यह निर्णय अत्यन्त सराहनिय था और अपने आप में एक अनुठी पहल । निश्चित तौर से वार्ड द्वारा किया गया सह कार्य वन सम्पदा के विनाश को रोकने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाएगा और खड़े वृक्षों को जीवन दान देगा ।

ग्राम पंचायत नन्दपुर के लोगों का सह कहना है कि यदि जायका वानिकी परियोजना के अर्न्तगत हमारी पंचायत जिसमें कि यदि हमारा वार्ड चयनित नही होता तो हमारा यह कार्य शायद ही कभी पूर्ण हो पाता । इसके लिए हम ही नही ब्लकि आने वाली पीढ़ियां भी सदैव परियोजना की ऋृणी रहेगी ।

आत्मर्निभरता की तरफ बढ़ता ग्रामीण वन विकास समिति सारी–2 का जगरनाथी स्वयं सहायता समूह

स्वयं सहायता समूह जगरनाथी ग्रामीण वन विकास समिति सारी–2 के अर्न्तगत गरीब परिवारों से सम्बन्ध रखने वाली महिलाओं के परिश्रम व लगन की कहानी है। सारी–2 गांव कुल्लू शहर से लगभग 20 कि0मी0 उतर की ओर उंचे पहाड़ पर बसा सुन्दर गांव है यहां के लोग बहुत ही महेनती व साधारण जीवन ब्यतीत करते हैं। गांव की भौगोलिक स्थिति, कम जमीन व जंगलों की बजह से लोगों को केवल 5–6 माह का ही काम मिलता है और साल के बाकि महीनों में अधिकतर लोगों के पास कार्य नही होता है।

सर्दियों में वर्फ पड़नें के कारण अधिक ठण्ड़ में महिलाऐं घरों के दैनिक कार्यो को करने के पश्चात बेकार बैठी रहती थी या कुछ महिलाऐ पुराने किसम की खड्डियों (रैच्छ) में साधारण पट्टू या शाल बुनती थी और कुछ

सिलाई की मशीनों पर कपड़े सिलती या रिपेयर करती थी। कुल मिलाकर महिलाओं में हथकरघा बुनाई व सिलाई में रूची तो थी लेकिन पैसों के आभाव से उचित प्रशिक्षण व बेहतर तकनीक की कमी के कारण महिलाऐ इस कार्य में कुशल नही थी व इनके बनाये हुऐ उत्पादों में गुणवता की भारी कमी थी।

बाजार में प्रचलित ड़िजाईनों, रंगों व इससे जुड़ी अन्य बारिकियों के आभाव के कारण ये उत्पाद बाजार में नही बिक सकते थे। महिलाओं के पास आमदानी का कोई साधन न होना उनके पिछड़ेपन व आत्मविश्वास की कमी का मुख्य कारण था।

वर्ष 2019–20 में जाईका परियोजना ने गांव सारी – 2 में कार्य करना शुरू किया। शुरूआती दौर में गांव में जागरूकता बैठके की जिसमें ग्रामीणों को परियोजना के कार्यो जिसमें वनों, पारिस्थितिकी विकास, आय सुधार व स्थानीय संगठनों का निर्माण प्रशिक्षण व उनके विकास के वारे में बताया गया इसी दौरान कुछ महिलाऐं संगीता, सुनिता व अन्य 15 महिलाऐं परियोजना के संर्म्पक में आई और इनके साथ बैठक करके पता चला कि इनकी रूची आधुनिक हथकरघा व सिलाई ब्यवसाय में है लेकिन इस कार्य के लिए प्रशिक्षित नही है। परियोजना अधिकारियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि अगर कुछ महिलाओं को आधुनिक खड्ड़ी पर बार्डर, फूलों व बुनाई पर और साथ ही अन्य महिलाओं को सिलाई पर प्रशिक्षण दिया जाऐ तो एक अच्छा टिकाउ स्थानीय आय उर्पाजन का साधन बन सकता है।

10 मार्च, 2020 को ग्रामीण वन विकास समिति का गठन हुआ और साथ ही कार्यकारिणी कमेटी का गठन किया गया। अक्तूवर, 2020 को पुनः महिलाओं के साथ बैठक की गई और उनकी रूची के वारे में पुनः पूछा गया और साथ ही स्वयं सहायता समुह बनाने वारे, उनकी भागेदारी के वारे में चर्चा व परिचर्चा हुई। आगामी बैठको में समूह के नियम व विनियम बनाने के वारे में बातचित हुई व सर्व सहमति से समूह के कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें श्री मती सुनिता देवी प्रधान व श्री मती संगीता देवी सचिव चुनी गई। इन्होनें 200 रूप्ये समूह की सदस्यता फीस रखी व 100 रूपये मासिक चंदा तय किया। इसी दौरान 15 में से 5 महिला समूह को छोड़ गई और यह समूह 10 सदस्यों का रह गया इन्होनें ने अपने समूह का नाम जगरनाथी स्वयं सहायता समूह रखा व हिमाचल ग्रामीण बैंक में 4800 रूपये जमा करवाकर समूह का खाता खोला जिसका संचालन प्रधान व सचिव के संयुक्त हस्ताक्षरों से रखा।

परियोजना व समूह के सदस्यों ने जगरनाथी स्वयं सहायता समूह की ब्यवसाय योजना बनाई जिसमें पूजीं लागत लगभग 70 हजार रूपये थी और जिसमें 50 प्रतिशत 35 हजार रूपये समूह के सदस्यों की भागीदारी बनी थी। परियोजना ने 14 मार्च से 1 अप्रैल तक खड्डी व सिलाई प्रशिक्षण के लिए समय र्निधारित

किया। हमें परियोजना ने 50 प्रतिशत अनुदान पर 4 खड्डीयां, 4 नम्बर सिलाई मशीनें जो मोटर से चलती थी साथ ही इससे व प्रशिक्षण से सम्बन्धित सभी जरूरी चीजें खरीदी जैसे कपड़ा, धागा, कैंची चरखा, प्रैस, कटींग से सम्बन्धित सामग्री इत्यादि। 14 मार्च निंधारित समय से प्रशिक्षण सारी गांव में शुरू किया गया और मास्टर ट्रेनर श्री जुगत राम सेवा निवृत हथकरघा विभाग व श्री मती सुमना देवी द्वारा शुरू किया गया।

खड्डी प्रशिक्षण में खड्डीयों को जोड़ना, ताणा बाणा लगाना और हाथ की सफाई के लिए 3 से 4 मीटर कपड़ा व पलेन स्टॉल बुने गये हाथ साफ होनें के उपरान्त विभिन्न डिजाईनों व फूलों वाली डिजाईनों पर प्रशिक्षण शुरू हुआ और साथ ही सिलाई पर सादा खड्डी पर उनी बुने हुऐ कपड़े पर प्रशिक्षण शुरू किया जिसमें टोपी, बच्चों, पुरूषों व लेडीज़ जैकटों पर कार्य किया। आज हमारे पास 35 सादे व फुलों वाले स्टॉल, 20 टोपियां और 8 मीटर उनी कपड़ा तथा 25 से अधिक बच्चों, पुरूषों व लेडीज़ जैकटें बनी है ये सब धुलाई व प्रैस उपरान्त मार्केट में बेचने के लिए तैयार है।

"आज हमें बहुत अधिक खुशी है कि हमारे द्वारा तैयार किया हुआ सामान बाजार में बिकने लायक है हमारा बंनाई व सिलाई का हुनर दिन प्रतिदिन काफी बढ़ा है आज हम नये नये डिजाईन बना सकते हैं। हमारा अपना संगठन खड्डी व सिलाई की ईकाइ खडी हो गई है। हम आत्म निंभर तो अभी नही हुई है परन्तु भविष्य में बहुत जल्दी आत्म निंभर हो जाऐगी व लोगों को भी अपने साथ जोड़ेगी"

इस सारी आत्म निंभर यात्रा के लिए हम जाईका वानिकी परियोजना का तह दिल से धन्यवाद करती हैं।

संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना

द्वितिय चरण की 181 ग्राम वन विकास समितियों, जैव–विविधता प्रबन्धन समितियों व उप समितियों के चयन की प्रकिया पूरी हो चुकी है तथा 13 वन मण्डलों के 25 वन परिक्षेत्रों व 4 वन्यप्राणी परिक्षेत्रों के सम्बन्धित वार्डों की ग्राम वन विकास समितियों, जैव विविधता प्रबन्धन समिति उप समितियों के गठन का प्रारम्भिक चरण शुरू हो चुका है। सूक्ष्म योजनाएं तैयार करने हेतु सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन की प्रकिया आरम्भ की गई है।

काईस और खोखान अभ्यारण्यों के लिए सातोयामा पहल के तहत प्रस्तावित गतिविधियां

पृष्ठभूमिः सातोयामा पहल, एक अंतरराष्ट्रीय प्रयास है जिसमें पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए मौजूदा मौलिक सिद्धांतों के अनुरूप गतिविधियों को बढ़ावा देना है। इसकी मूल भावना समाज का प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना है, जो कि सकारात्मक मानव व प्रकृति के संबंधों पर आधारित है। परियोजना के तहत जैव विविधता और लाभार्थियों के लाभ के लिए सामाजिक–पारिस्थितिक उत्पादन परिदृश्य के प्रचार और समर्थन की दिशा में सहभागी वन प्रबंधन को अपनाते हुए सातोयामा गतिविधियों को अंजाम देने के लिए हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा संचालित तथा जाइका वित्तपोषित "हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना" (PIHPFEM&L) के माध्यम से सातोयामा पहल के लिए एक अंतरराष्ट्रीय साझेदारी शुरू की गई है।

दृष्टिकोण: प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग और प्रबंधन का अभ्यास इस प्रयास का मुख्य केंद्र बिंदु है। इसमें आवश्यक रूप से पाँच पारिस्थितिक और सामाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण शामिल होने चाहिए:

- पर्यावरण की वहन क्षमता और लचीलेपन के भीतर संसाधनों का उपयोग
- प्राकृतिक संसाधनों का चक्रीय उपयोग
- स्थानीय परंपराओं और संस्कृतियों के मूल्य और महत्व की पहचान
- प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के टिकाऊ और बहु–कार्यात्मक
- प्रबंधन में बहु–हितधारक भागीदारी और सहयोग
- गरीबी में कमी, खाद्य सुरक्षा, स्थायी आजीविका और स्थानीय समुदाय
- सशक्तिकरण सहित स्थायी सामाजिक–अर्थव्यवस्था में योगदान

इन गतिविधियों को कुल्लू और स्पीति वन्यप्राणी व मंडलों में संबंधित बीएमसी के तहत 60 बीएमसी उप–समितियों में लागू किया जाएगा। यह दस्तावेज हिमाचल प्रदेश के कुल्लू वन्यप्राणी डिवीजन के तहत और काईस तथा खोखान वन्य जीवन अभयारण्यों के भीतर प्रस्तावित बीएमसी के तहत 18 उप–समितियों में कार्यान्वित किए जाने वाले कार्यक्रम का विवरण प्रदान करता है। साइट विवरण नीचे तालिका –1 में सारणीबद्ध हैं:

तालिका –1: काईस तथा खोखान सेंक्चुरी के तहत सातोयामा पहल के लिए प्रस्तावित उप समितियां

डिवीजन	रेंज	अभ्यारण्य	बीएमसी	बीएमसी उप–समितियों
कुल्लू	कुल्लू	काईस	काईस	काईस, सेउबाग, धाराघौट
		काईस	सोयाल	सोयाल–I, कोटाधार, सौर
		काईस	कराड़सु	टंडला कराड़सु बिष्टबेहड़
		काईस	गहार	सेउबाग–II, गहार, फाड़मेह
कुल्लू	कुल्लू	खोखान	निउल	निउल, छावार, शोगी
		खोखान	शिलिराजगिरी	जनहाली, लोट, बाखली

इसी तरह की गतिविधियों को कुल्लू डीएमयू (वन्यप्राणी) के तहत बखली (सुंदरनगर वन्यप्राणी रेंज) और मनाली (मनाली वन्यप्राणी रेंज) और स्पीति वन्यप्राणी डिवीजन के तहत काजा और स्पीति वन्यप्राणी रेंज में क्रमिक विकास के आधार पर कवर किया जाएगा।

गतिविधियां: गतिविधियों को निम्नलिखित दो स्तरों पर लागू किया जाएगा:

- सूक्ष्म स्तर (जैवविविधता उप–समिति के स्तर पर)
- स्ंदकेबंचम (परिदृश्य) स्तर (काईस वन्यप्राणी अभयारण्य के स्तर पर)

काईस और खोखान डब्ल्यूएलएस के लिए सातोयामा पहल के तहत प्रस्तावित गतिविधियां

सूक्ष्म और परिदृश्य स्तरों पर निम्नलिखित गतिविधियों को क्रियान्वित करने की योजना है:

- बान, मोरू, कीकर, बीउल, शाढ़े, आड़ू जैसी चौड़ी पत्ती वाली प्रजातियों का वृक्षारोपण
- लगाए गए चारे की प्रजातियों का रखरखाव
- गांव के मवेशियों के लिए गौशाला का विकास और रखरखाव
- पुतलों का प्रावधान (फसल सुरक्षा हेतु)
- ड्रमों का प्रावधान (फसल सुरक्षा हेतु)
- जल संरक्षण और सिंचाई के लिए जल संचयन संरचनाएं
- नागछत्री, वन काकड़ी, पतीश, कड़ू, चोरा, सालम मिश्री, निहानु, दनाक्ष, पांजा, जंगली
- लहसुन आदि औषधीय पौधों की खेती।
- लघु वन उत्पाद (गुच्छी और अन्य मशरूम सहित) के नियंत्रित निकासी पर जागरूकता
- मशरूम की खेती

- अग्नि दस्तों, तकनीकों और उपकरणों के माध्यम से जंगल की आग से लड़ना
- जैविक खेती और वर्मी कम्पोस्टिंग को बढ़ावा
- महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा जैविक कीटनाशकों का बनाना
- कोदरा, कौनी, सिरियारा, ताक आदि का पुनरुद्धार।
- देवता वनों के आसपास महत्वपूर्ण प्रजातियों (शमशाद और देवदार) का वृक्षारोपण
- तृतीय श्रेणी के वनों में नेपियर घास लगाना
- बीएमसी उप समितियों को मवेशियों के लिए खनिज मिश्रण की आपूर्ति
- औषधीय पौधों का प्रसंस्करण
- रखाल, बुरांश और जंगली जामुन का वृक्षारोपण
- पहाड़ी बांस (निर्गाल) का रोपण
- आतिथ्य (Hospitality) और उत्पादों के विक्रय में कौशल वृद्धि

परिदृश्य स्तर (Landscape level) की गतिविधियाँ :

- शेगल जैसे जंगली फलों का रोपण
- सौर बाड़ (solar fencing)
- ऊंचे क्षेत्र के चरागाहों में घास के बीज बोना
- जैविक विरासत स्थल (Biological Heritage Sites) की पहचान और उनका संरक्षण
- वन्य जीवों के लिए वाटरहोल का निर्माण
- फूतासौर झील का पुनरुद्धार
- परिंदों के लिए निर्गाल का पौधारोपण
- सेंक्चुरी से ईंधन की लकड़ी की निकासी में कमी
- ट्रेकिंग और कैम्पिंग कार्यक्रम
- ट्रेकरों के भ्रमण के दौरान सूचनाध्व्याख्या केंद्र की स्थापना
- आवास प्रबंधन के लिए स्थानीय ग्रामीणों द्वारा समूह में गश्त करना
- वन्य जीवों का पशु संक्रमण रोगों से वचाव

लोट बीएमसी उप–समिति, खोखान WLS के सदस्यों के साथ परामर्श बैठक

सोयाल बीएमसी उप–समिति काईस WLS के सदस्यों के साथ बैठक

उपरोक्त गतिविधियों को कार्यान्वयन के लिए माइक्रोप्लान में शामिल किया गया है। हालांकि इको–टूरिज्म PIHPFEM&L परियोजना के तहत सतोयामा पहल गतिविधि का एक हिस्सा है, अगले संस्करण में इस पर एक अलग लेख प्रकाशित किया जाएगा।

आजीविका घटक के तहत व्यवसायिक योजनाओं का निर्माण

सूक्ष्म योजना तैयार करते समय अनेक आयसृजन गतिविधियां सामने आई हैं। अनेक बैठकें आयोजित की गईं और विस्तृत वार्तालाप किया गया ताकि औपचारिक स्वयं सहायता समूहों और समान रूचि समूहों को सक्रिय बनाया जा सके। उनकी लिखित सहमति ली गई। उनके चुनाव करवाए गए तथा उन्हें

अपने प्रतिनिधियों, नियमों और विनियमों का चुनाव करने के लिए कहा गया। बैंक खता खुलवाया गया तथा समूह का मासिक योगदान शुरू किया गया। नेतृत्व, कार्यवाही लेखन, लेखा–जोखा रखने, आपसी लोनिंग आदि बारे इन समूहों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इस बीच खुम्ब की खेती, हैंडलूम, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, बुनाई, अचार, पत्तल बनाने आदि के लिए व्यावसायिक योजनाओं की तैयारी पूरी हो चुकी है।

निकिता स्वयं सहायता समूह सफलता की कहानी

यह कहानी वनपरिक्षेत्र मण्ड़ी, मांडल वार्ड, निकिता स्वयं सहायता समूह की है। जायका परियोजना के कर्मचारियों द्वारा वर्ष 2019 में मांडल वार्ड में ग्रामीण समीक्षा मूल्यांकन द्वारा विभिन्न बैठकें की गई। जहां एक ओर परियोजना के विभिन्न कार्यों द्वारा किसानो को लाभ पंहुचाया वही दूसरी ओर महिलाओं को संगठित कर लघुबचत व आय के अन्य साधनों के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाईं गई।

वर्ष 2020 में परियोजना द्वारा 8 महिलाओं का निकिता स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। बैठक के दौरान सभी महिलाओं ने बडी बनाने का काम करने में रूची दिखाई। परियोजना द्वारा वर्ष 2021 में समूह को ग्राइंडिंग मशीन व अन्य सामान उपलब्ध करवाए गए।

मई 2021 में समूह की महिलाओं में सिरा बनाने का कार्य शुरू किया। ये महिलायें अपना तैयार सामान आस–पास के गांव, बाजार और नेरचौक में स्टाल लगा कर (जो बल्ह ब्लॉक के द्वारा समूह का स्थान दिया गया है) बेचती है। ये महिलाये आर्डर पर भी सिरा बेचती है। इस समूह की माह 10/2021 तक की आमदानी 12000 रूपयेहै। भविष्य में इनका सपना है कि समूह की आमदानी 50000 प्रतिमाह हो।

महिलाओं द्वारा तैयार किये गये उत्पादों की त्रिपुरा जायका परियोजना टीम और जापान जायका परियोजना मिशन टीमनें सराहना की । अंत में सभी महिला ये परियोजना का धन्यवाद करती है कि परियोजना से उन्हे नई पहचान मिली है और वे आत्मनिर्भर हुई है।

गवर्निंग बॉडी बैठक

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के नियामक मण्डल की छटी बैठक 02 दिसंबर, 2021 को सचिवालय के आर्मसडेल भवन सभागार, शिमला में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता अति. मुख्य सचिव (वन) हि.प्र. सरकार, श्रीमती निशा सिंह ने की। इस सभा में नियामक मण्डल सदस्यों, मुख्य परियोजना निदेशक एवं सदस्य सचिव, परियोजना निदेशक तथा कार्यालय कर्मचारियों ने भाग लिया। सभा के आरम्भ में मुख्य परियोजना निदेशक एवं सदस्य सचिव मुख्य ने नियामक मण्डल के अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों का अभिनन्दन किया। उन्होंने परियोजना के लक्ष्यों, उद्देश्य, परिव्यय तथा

घटकों सम्बन्धी जानकारी प्रस्तुत की। तत्पश्चात, माननीय अध्यक्ष की आज्ञा से छटी नियामक मण्डल बैठक कार्य सूची/एजैंडा की समीक्षा व आगे के 17 अन्य एजैंडा को विस्तृत चर्चा एवं निर्णय हेतु पस्तुत किया। आरम्भ में नियामक मण्डल द्वारा एजैंडा को पारित किया गया तथा कोविड–19 स्थिति के दृश्टिगत वर्ष 2021–22 के परियोजना बजट को 64 करोड़ रूपए से संशोधित कर 45 करोड़ रूपए किया गया।

बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए;-

- JICA वानिकी परियोजना में एचपीएफडी की जल भंडारन योजना को अपनाने को मंजूरी दी
- JICA वृक्षारोपण क्षेत्रों में रखरखाव के लिए HPFD मानदंडों को अपनाने को मंजूरी दी
- बड़ी बनाने, मधुमक्खी पालन, सीरा बनाने, अचार बनाने, चुल्ली तेल निकालने और वर्मिन कंपोस्टिंग व्यवसाय योजनाओं के लागत मॉडल को मंजूरी दी गई है।
- उपायुक्त द्वारा अनुमोदित दरों पर डीएमयू लाहौल के लिए एक वाहन (बोलेरो) किराए पर लेने की मंजूरी दी
- सभी 61 परियोजना रेंजों के लिए क्षेत्र के उपायुक्त द्वारा अनुमोदित दरों पर बोलेरो कैंपर के स्थान पर बोलेरो किराए पर लेने की मंजूरी दी।
- एक मीडिया विशेषज्ञ की सेवाएं लेने की स्वीकृति दी
- दो सेवानिवृत्त वरिष्ठ सहायक/अधीक्षक की सेवा लेने की मंजूरी दी
- श्री सीता राम सेवानिवृत उप रेंजर को नर्सरी विशेषज्ञ के रूप सेवा लेने की स्वीकृति प्रदान की
- मंडी में एक आजीविका संसाधन केंद्र की स्थापना के प्रस्ताव को मंजूरी दी
- वीएफडीएस/बीएमसी उप-समिति में परियोजना के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए स्थानीय लोक सांस्कृतिक समूहों का उपयोग करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी

आयोजित बैठकें / कार्यशालाऐं / प्रशिक्षण कार्यक्रम

- 13 वीं और 14 वीं परियोजना की कार्यकारिणी समिति की बैठक क्रमशः 30 सिंतंबर 2020 और 20 जनवरी 2021 को हुई।
- हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के गवर्निंग बॉडी की छटी बैठक 02 दिसंबर, 2021 को सचिवालय के आर्मसडेल भवन सभागार, शिमला में आयोजित की गई
- श्री नागेश कुमार गुलेरिया, अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) की अध्यक्षता में शिमला, कुल्लू और मंडी वन वृत्त में जाइका वानिकी परियोजना से सम्बंधित किये जा रहे कार्यों की समीक्षा बैठक क्रमशः 9 दिसंबर 2021, 18 दिसंबर 2021 और 31 दिसंबर 2021 को आयोजित की गई ।
- केवीके सुंदरनगर में दूध और दुग्ध उत्पादों के मूल्यवर्धन पर जगदंबा एसएचजी के प्रतिनिधि के लिए 6 अगस्त 2021 को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- वन प्रशिक्षण संस्थान सुंदरनगर में 24.08.2021 से 25.08.2021 तक जेआईसीए परियोजना के लेखा कर्मचारियों के लिए सार्वजनिक वित्त प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- वन प्रशिक्षण संस्थान चैल में 02.09.2021 से 03.09.2021 तक जेआईसीए परियोजना के लेखा कर्मचारियों के लिए लोक वित्त प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

- खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन (अचार बनाना) पर रोपारी वीएफडीएस के प्रतिनिधि के लिए 20 जुलाई 2021 को केवीके सुंदरनगर में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- मधुमक्खी पालन पर 7 से 9 जुलाई 2021 तक डीएमयू नाचन के सम्मेलन हॉल में शिकारीमाता और आस्था एसएचजी के प्रतिनिधि के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- अपर मुंडू के पंचायत घर में मशीन बुनाई पर जय मां चामुंडा एवं जय मां दुर्गा, स्वयं सहायता समूह के प्रतिनिधि के लिए 07 से 21 जनवरी 2022 तक दो सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- खानीपांडे वीएफडीएस के अंबिका एसएचजी के प्रतिनिधि के लिए हथकरघा संबंधी गतिविधियों पर 1 दिसंबर, 2021 से 14 जनवरी 2022 तक 45 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- भालथा वीएफडीएस के भालथी नारायण एसएचजी के प्रतिनिधि के लिए हथकरघा संबंधी गतिविधियों पर 16 अक्टूबर, 2021 से 30 नवंबर 2021 तक 45 दिवसीय ऑन साइट प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मीडिया में प्रोजेक्ट गतिविधियाँ

शिमला, शुक्रवार, 12 नवंबर, 2021
दिव्य हिमाचल

हिमाचल जाइका वानिकी परियोजना की सराहना

प्रदेश के संक्षिप्त मंडल के क्षेत्रों का भ्रमण के बाद शिमला पहुंचे जाइका सुपरविजन मिशन दल ने दी शाबाशी

कार्यालय संवाददाता – ठियोग

जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग ... समितियों तथा स्वयं सहायता समूह समितियों के प्रतिनिधियों के साथ जाइका गतिविधियों की ... कार्यक्रम की प्रस्तुति भी की गई। वरिष्ठ रेप्रेजेंटेटिव अकेमीनों कैंगो ने हिमाचल प्रदेश जाइका ... टोपोग्राफिक सर्वेयिंग तथा एरियल मैपिंग की जा सकेगी जिससे प्रदेश में अंतरराष्ट्रीय ...

रोपड़ी में जायका मिशन की समीक्षा

विकास के लिए दान की भूमि का लिया जायजा

...र के गांव कठोगण में शनिवार को ग्रामीण वन विकास समिति की आम सभा ...वानिवृत्त तथा ग्रामीण विकास समिति के प्रधान पवन कुमार ठाकुर द्वारा की ...ने का फैसला लिया गया। पवन ठाकुर ने बताया कि समस्त गांववासियों ने ... है। उसे समतलीकरण करके भविष्य में निर्माण योग्य तैयार करके आगे के ...होंने कहा कि शीघ्र ही इस जमीन पर जायका कार्यालय एवं सामुदायिक भवन ...र सरकार से सहयोग लेकर महिला मंडल भवन, ... भवन तथा संभव ...शिश करेंगे, जिससे ... को मुहैया कराई ...शकीमती जमीन

गांव कठोगण विकास की ओर अग्रसर

पृथ्वी लोक ब्यूरो

सरकाघाट। उपमंडल ...

'कठोगण' गांव में मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण देने के लिए जायका टीम का जताया आभार

स्वतंत्र हिमाचल
(धर्मपुर) डी आर कटवाल

उपमंडल सरकाघाट के ईलाका मढ़ोता की टिक्कर पंचायत के गांव कठोगण में मशरूम तैयार करने का स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण देने के लिए भारतीय वायुसेना से सेवानिवृत्त एवं ग्रामीण वन विकास समिति 'कठोगण' के प्रधान सार्जेंट पवन कुमार ठाकुर ने ग्रामीणों को प्रशिक्षित करने के लिए जायका टीम के सदस्यों सेवानिवृत्त डीएफओ .वी.पी. पठानिया, डा० पंकज सूद, (एस एम एस) विजय, बी ओ विजय, गार्ड रघुवीर वन विभाग तथा एफ टी यू मोनिका धीमान ... व्यक्त किया ...

बताया कि जायका टीम का प्रशिक्षण के लिए यह दूसरा दौरा है। इसके पहले ... सामुहिक ... स्थानों पर मशरूम की खेती शुरू कर दी है। ...

शिमला, शुक्रवार, 3 दिसंबर, 2021

जायका वानिकी परियोजना की बैठक

शिमला। अतिरिक्त मुख्य सचिव वन निशा सिंह की अध्यक्षता में ... प्रदेश जायका वानिकी परियोजना की छठी गवर्निंग बॉडी की ... सचिवालय के आरएमस डेल भवन में आयोजित हुई। ... अन्य प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए अतिरिक्त प्रधान ... एवं मुख्य परियोजना अधिकारी ,नागेश कुमार गुलेरिया ... महामारी के उपरांत भी जायका वानिकी परियोजना ... की गतिविधियों की प्रगति सुचारु ... मिशन टीम ...

मंगलवार, 10 अगस्त 2021
अमर उजाला

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने लगाए पौधे, जाइका अधिकारियों ने की सफाई

... प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने प्रदेश भर में सोमवार ... इस अभियान के दौरान सभी क्षेत्रीय ... की मदद से सफाई की गई। ... व अन्य तरह के कच... भी रोपे गए। इसके अल... के क्षेत्रीय कार्यालय ... सफाई अभियान चलाया। ... हिमाचल प्रदेश सरकार ... वाले स्वच्छ हिमाचल अभि... परियोजना के पॉटर्स हिल ... कूड़ा संभावित स्थानों की पह... परियोजना निदेशक (जा... अधिकारियों, कर्मचारियों ... मिलकर इस क्षेत्र को कूड़ा ... आह्वान किया कि सात दिनों ... सफल बनाने में अपना भर... अपने जीवन में अपनाएं। ब्यूरो

अमर उजाला

कठोगण के ग्रामीणों ने जमीन को किया समतल

विकास कार्यों के लिए लोगों ने दान दी है भूमि

कठोगण गांव में दान में मिली जमीन को समतल करते ग्रामीण। -संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

सरकाघाट (मंडी)। उपमंडल की टिक्कर पंचायत के कठोगण गांव में ग्रामीणों ने विकास कार्यों के लिए दान में मिली भूमि को समतल करने का काम शुरू कर दिया है। एक बीघा जमीन को ग्रामीणों ने दान किया है।

इस जमीन पर सामुदायिक भवन, युवक मंडल भवन और एक छोटा मैदान बनाया जाएगा। इन सभी कार्यों को लेकर ग्रामीणों की आम सभा हुई। इसकी अध्यक्षता वायुसेना से सेवानिवृत्त पवन कुमार ... की। सभा में गांव के ... का ... भूमि विकास कार्यों के लिए दान की उसका समतलीकरण करके भविष्य में निर्माण योग्य तैयार करके आगे के निर्माण कार्यों को गति दी जाएगी।

उन्होंने कहा कि शीघ्र ही इस जमीन पर सामुदायिक भवन का निर्माण किया जाएगा।

इसके बाद बची भूमि पर सरकार से सहयोग लेकर युवक मंडल भवन और एक मैदान का निर्माण किया जाएगा। कठोगण गांव के दिनेश कुमार, प्रमीला देवी, राजेंद्र ठाकुर, मिल्खी राम, महिपाल, अच्छर सिंह ठाकुर ने जमीन दान की है।

युवक मंडल कठोगण के प्रधान कैलाश चंद और सदस्यों ने विकास ... आरंभ करने के लिए सभी ...

उत्पाद बेचने को बाजार का भी इंतजाम करेगा जायका प्रोजेक्ट

स्वारघाट में वन विभाग अधिकारियों ने लोगों को दी परियोजना की जानकारी

निजी संवाददाता-स्वारघाट

वन विभाग द्वारा हिमाचल के ग्रामीण क्षेत्रों में जापान इंटरनेशनल को-आपरेशन एजेंसी (जायका) के सहयोग से व्यावसायिक फल और फसलों ... अरण्यपाल व मुख्य परियोजना निदेशक नागेश गुलेरिया ने इस संबंध में वन विभाग के वन परिक्षेत्र अधिकारी कार्यालय स्वारघाट के वन चेतना प्रशिक्षण केंद्र में गठित की गई। ग्रामीण वन विकास समितियों के सभी ...

शिमला, गुरुवार, 11 नवंबर, 2021
epaper.divyahimachal.com

एचपी जेआईसी वानिकी परियोजना के प्रयास सराहे

शिमला। जापान इंटरनेशनल को-ऑपरेशन एजेंसी की पर्यवेक्षण मिशन टीम ने अकेमिनो केंगो के नेतृत्व में मुख्य विकास विशेषज्ञ, जेआईसीए विनीत सरीन ने बुधवार को ठियोग वन प्रभाग की सर्किल स्तरीय वन नर्सरी का दौरा किया। जेआईसी पर्यवेक्षण मिशन ने एचपी जेआईसी वानिकी परियोजना के प्रयासों की सराहना की है। हिमाचल के अपने संक्षिप्त दौरे के दौरान, मिशन टीम ने बिलासपुर, सुकेत और मंडी वन प्रभागों में जेआईसीएफ वानिकी परियोजना स्थलों का दौरा किया। जेआईसीए इंडिया के वरिष्ठ प्रतिनिधि अकेमिनोकेंगो ने एचपी जेआईसीए फॉरेस्ट्री प्रोजेक्ट द्वारा आयोजित एक सरल लेकिन प्रभावशाली ड्रोन लॉचिंग समारोह में एक ड्रोन भी लॉच किया। एपीसीसीएफ-सह-सीपीडी जेआईसीए हिमाचल प्रदेश नागेश गुलेरिया ने कहा कि शुरू में इस सुविधा का इस्तेमाल परियोजना के चुनिंदा पायलट क्षेत्र में किया जाएगा। उन्होंने कहा कि उनकी गति और सटीकता से ड्रोन का उपयोग क्षेत्रों को स्कैन करने, थर्मल इमेजरी, स्थलाकृतिक सर्वेक्षण और हवाई मानचित्रण के लिए किया जा सकता है जो अंतरराष्ट्रीय मानकों की आवश्यकता के अनुसार राज्य में वनों के वैज्ञानिक प्रबंधन में मदद करेगा।

विकास कार्यों का लिया जायजा

जायका समीक्षा मिशन के मुख्य विकास विशेषज्ञ विनीत ने किया निरीक्षण

अतीत कौर/देवभूमि मिरर

नेरचौक। मंगलवार को जायका परियोजना द्वारा वन परिमंडल मंडी व बल्ह के अंतर्गत किए गए विभिन्न कार्यों का समीक्षा जायजा किया गया। यह निरीक्षण जायका समीक्षा मिशन के मुख्य विकास विशेषज्ञ विनीत एस शिरीन द्वारा किया गया। सबसे पहले कमांद नर्सरी का निरीक्षण किया गया। उसके पश्चात विहनधार 1 में पतल के स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ बातचीत की गई व उनकी समस्याओं के बारे में जान उनका समाधान किया गया। उसके बाद बल्ह के टिकरी व मांडल वन परिक्षेत्र के वार्ड में किए गए कार्यों का जायजा लिया गया। टिकरी वार्ड में संसरपाली पौधारोपण व सैन पाली, टॉन, देवबाग में 10 हेक्टेयर भूमि में किये गए पौधरोपण का निरीक्षण किया गया। मांडल गांव में लक्ष्मी व निमिता स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों का निरीक्षण किया गया व उनकी समस्यओं का समाधान किया गया। वन परिक्षेत्र अधिकारी राजेश ठाकुर ने बताया कि जायका परियोजना स्वयं सहायता समूहों की जरूरी सहायता कर रहा है। ग्रामीण लोगों की आये व उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिए विभिन्न प्रकार की सहायता प्रदान करती है व समय समय पर उनकी समस्यों के बारे में जानकारी लेकर उनका समाधान किया जाता है। इस अवसर पर परियोजना निदेशक नागेश गुलेरिया, जड़ी बूटी विशेषज्ञ आर सी कंग,वन मंडल अधिकारी मंडी वासू डोगर व वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से बिलासपुर वन मण्डल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र के ढींगू में पामारोजा की खेती और तेल आसवन इकाई

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने वन मण्डल कुल्लू के वन परिक्षेत्र भुट्टी की वन विकास समिति खणीपाण्डे-पवणग का दौरा

विस्तृत जानकारी के लिए संर्म्पक करें:-

मुख्य परियोजना निदेशक, जाईका वानिकी परियोजना

पॉटरस हिल, समरहिल, शिमला–5 हिमाचल प्रदेश दूरभाष: 0177-2830217, ई0 मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

वेबसाइट: https://jicahpforestryproject.com

परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एव ंमूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाष:1902 -226636, ई0 मेल: -pdjicakullu@gmail.com

अतिरिक्ति परियोजना निदेशक, सामूदायिक एवं संस्था क्षमता उत्थान इकाई

जाईका वानिकी परियोजना, रामपुर दूरभाष: 01782-234689, ई0 मेल: -dpdrmp2018@gmail.com

प्रकाशन: - अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई, हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजिविका सुधार परियोजना कुल्लू